समर्पण

यह अमूल्य धरोहर
पूज्य पिता
श्री आद्याशंकर मिश्र के
श्री चरणों में सादर
समर्पित

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि आशुतोष कुमार मिश्र ने मेरे निर्देशन में काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, सन्त रविदास नगर भदोही से शोध विषय "भागवत धर्म एक दार्शनिक अध्ययन – चैतन्य महाप्रभु के विशेष संदर्भ में" *पर निर्धारित समय सीमा में अपना शोध कार्य सम्पन्न किया। यह शोध प्रबन्ध इनके शोधकाल में किये गये विशिष्ट अध्ययन एवं अन्वेषण का परिणाम है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है कि किसी अन्य उपाधि के लिये इसका प्रयोग नहीं हुआ है।*

प्राचार्य
डा0 चन्द्र विजय चतुर्वेदी
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय ज्ञानपुर सन्त रविदास नगर
भदोही, उ0प्र0

निर्देशक
डा0 बी पाण्डेय
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय ज्ञानपुर सन्त रविदास नगर
भदोही, उ0प्र0

अनुक्रमणिका

समर्पण		
आभार		I-II
प्रस्तावना		I-IV
प्रथम अध्याय	भूमिका भागवत धर्म के स्वरूप व्याख्या श्री "मद" भागवत के विशेष सम्बन्ध में।	1—28
द्वितीय अध्याय	भागवत धर्म के प्रकार, नवधा भक्ति की विवेचना।	29—55
तृतीय अध्याय	मधुर भक्ति का विवेचन महा प्रभु चैतन्य के संदर्भ में।	56—88
चतुर्थ अध्याय	गोपी कृष्ण के मधुर भावाश्रित प्रेम का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	89—138
पंचम अध्याय	मधुर भावाश्रित भक्ति की मानसिक अवस्था का दार्शनिक विश्लेषण	139—167
षष्ठम अध्याय	उपसंहार	168—178
	ग्रन्थ सूची	179—193

आभार प्रकाश

प्रस्तुत विनम्र प्रयास की पूर्णता की पावन बेला में मैं अपने शुभ चिन्तकों एवं मार्ग दर्शकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। सर्वप्रथम प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के निर्देशक डा0 बी0 पाण्डेय विभागाध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर संत रविदास नगर भदोही का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ जिनकी निरन्तर प्रेरणा एवं दिशा निर्देश से ही इस कार्य को सम्पादित करने में मैं समर्थ हो सका।

महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 सी0बी0 चतुर्वेदी का मैं विशेष आभारी हूँ क्योंकि शोध जैसे गहन कार्य के सम्पादन में यथा समय आप द्वारा प्रेरणा मिलती रही है। दर्शन शास्त्र विभाग के डा0 विजय कान्त दूबे, डा0 सबिता भारद्वाज , उा0 किशोरी लाल पाण्डेय के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ क्योंकि आप सभी ने मुझे वैचारिक सहयोग प्रदान किया है। महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों में मैं डा0 आर0 के0 तिवारी के प्रति भी उनके सद्भाव के कारण कृतज्ञ हूँ।

कार्य के समपादन में अन्य जिन मित्रों से सहयोग प्राप्त हुआ है उनमें मुख्य है डा0 प्रमोद कुमार पाण्डेय, डा0 अजय कुमार सिंह डा0 हीरालाल उपाध्याय, अरूण दूबे एवं सुनिल कुमार राय आदि सबके प्रति हृदय से आभार प्रगट करता हूँ।

कार्य को सम्पादित करने में मुख्य प्रेरणा श्रोत के रूप में उत्साह वर्धन करने वाले पूज्य पिता श्री आद्या शंकर मिश्र, पूज्यनीया माता श्रीमती गोमती देवी, भाभी माँ श्रीमती हेमलता, भतीजा अंकित मिश्रा आलोक मिश्रा, आशीष मिश्रा, शिवम् मिश्रा एवं भतीजी श्वेता मिश्रा तथा पत्नी निशा मिश्रा आदि के प्रति मैं हृदय से आभार प्रगट करता हूँ।

अन्त में मैं पिता तुल्य पूज्य बड़े भाई डा0 लक्ष्मी शंकर मिश्र, प्रभारी चिकित्साधिकारी, मिर्जापुर को नमन करता हूँ क्योंकि उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मात्र औपचारिकता ही होगी। यह उन्ही की प्रेरणा का प्रतिफल है जो इस महान कार्य को सम्पादित कर सकने में सक्षम हो सका।

टंकण सम्बन्धी पूर्ण सहयोग मुझे श्रीराम कम्प्यूटर के डायरेक्टर श्री विनय दूबे एवं टंकण कर्ता अतुल कुमार तिवारी एवं उमेश पाण्डेय आदि के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

अन्त में मैं पुनः अपने शोध निर्देशक प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनके आशीर्वाद से यह दुलर्भ कार्य सम्पादित हो सका।

आशुतोष कुमार मिश्र

आशुतोष कुमार मिश्र
(शोध छात्र)

प्रस्तावना

भारत में वैष्णव भक्ति सिद्धान्त का इतिहास अत्यन्त प्राचीन वैदिक कर्म, मार्ग, उपसिष्टिों के ज्ञान मार्ग के पश्चात वैष्णवादी विचारधारा में भक्ति मार्ग का कम आता है, वैष्णव वेदान्त के अन्तर्गत सभी दार्शनिक सिद्धान्त उस तमिल वैष्णव भक्ति परम्परा की परिणति है, जिसका नेतृत्व ईसा के चतुर्थ शताब्दी से तमिल के द्वादसा आलवारों ने किया था। यद्यपि भक्ति मार्ग का प्रारम्भ दक्षिण भारत से हुआ, किन्तु उत्तरी भारत में भाग–वत से ही भक्ति का यद्यपि स्वरूप स्पष्ट होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से दिव्यप्रवन्ध, श्रीमदभागवत से प्राचीन अवश्य है। किन्तु जन सामान्य के लिए सहज भक्ति मार्ग के रूप में भागवत ही नवधा भक्ति के स्पष्ट स्वरूप की विवेचना करता है। यद्यपि नवधा भक्ति के समस्त उदाहरण आलवार सन्तों में पाये जाते है किन्तु उनकी भारत में नवधा भक्ति की विवेचना का प्राचीनतम ग्रन्थ भागवत ही है।

मधुर भाव साधंना में गोपी कृष्ण प्रेम वह उत्कृष्ठतम् भाव साधंना है जिस प्रकार की भाव साधंना की विवेचना दक्षिण के दिव्य प्रवन्धम् जैसे धर्म शास्त्र में उपलब्ध नहीं है, वैष्णव भक्ति साधंना में प्रेंम या अनुराग का मार्ग कर्मकाण्ड के विधिनिषेध, योग की कठोरता अथवा ज्ञान साधंना के वैचारिक अमिगनिवेषेध, से सर्वथा मुक्त होता है। भागवत भक्ति शास्त्र का अनुप ग्रन्थ है जिसमें प्रेमाभक्ति के यथार्थ स्वरूप की उदाहरण सहित व्याख्या की गयी है। भक्ति के क्षेत्र में प्रेमाभक्ति वैधी भक्ति से पूर्णतया भिन्न है। प्रेमाभक्ति में शांन्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा मधुर भावोंकी अन्तिम परिणति मधुर रति में होती है। मधुर भावाश्रित; भक्ति साधना का मुख्य स्रोत ब्रज की गोपियों है। भगवान श्री कृष्ण के प्रति गोपियों की शुंख अभिप्र, तथा अहेतु की

प्रीति का पुंखानुपुंख वर्णन जो भागवत में मिलता है, उसका दार्शनिक विवेचना ही इस शोध का उद्देश्य स्व प्रतिपाद्य विषय है।

भागवत वर्णित मधूर भाव वस्तुतः वह भाव है, जिसमें भक्त भगवान से तादास्म्य की अनुभक्ति करता है। लौकिक जगत में पति–पत्नी का सम्बन्ध प्रेम की दृष्टि से उत्कृष्ट माना जाता है, इस प्रकार का ही सम्बन्ध भक्त और भगवान में स्वीकार कर साधंना करना मधुर भक्ति साधना है। दक्षिण भारत में आण्डाल, शठ कोप तथा उत्तर भारत में मीरा एवं महा प्रभु चैतन की भा साधंना मधुर भावाशित साधंना ही थी। इसी प्रकार की भाव साधंना का दार्शनिक विवेचना ही वर्तमान शोंध का मात्र उद्देश्य है।

भागवत वर्णित गोपी प्रेम मधुंर भक्ति साधना का श्रेष्ठतम उदाहरण है। धार्मिक दृष्टि से गोपी प्रेम मधुर भाव का ऐसा उत्कृष्ट स्वरूप है, जिस स्वरूप का अन्यत्र उदाहरण सम्भव नहीं हो पाता । यद्यपि भागवत का मधुर भाव धर्म शास्त्र में उत्कुष्ट भाव के रूप में मान्यता प्राप्त है, किन्तु दार्शनिक दृष्टि से भी इस भाव की विवेचना आवश्यक है और यही प्रस्तुत शोध का प्रतिपाद्य विषंय है।

भागवत वर्णित मधुर भावाश्रित प्रेमा भक्ति का मनोवैज्ञानिक विवेचन सम्भव है, या नहीं, यह तथ्य विचारणीय है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस उत्कुष्ट भाव के लक्षण एवं स्वरूप की विवेचना भी आवश्यक है। गोपियों एवं श्री कृष्ण का प्रेम लौकिक स्त्री– पुरूष सम्बन्ध पर आधारित होते हुये भी अलौकिक सा प्रतीत होता है। ईश्वरोपासना के इस मार्ग वाह्य स्वरूप जितना ही सरल प्रतीत होता है। इसका आन्तरिक स्वरूप उतना ही कठिन । इस भाव में सम्पूर्ण आकर्षण एक ही ओर होने के कारण यह तीब्र प्रेम के रूप में परिलक्षित होता है। इस प्रकार के प्रेम की प्रगाढ़ता के मानसिक स्वरूप की व्याख्या वर्तमान मनोविज्ञान कर सकता है यश नहीं, यह विवेचना

का विषय है। वस्तुतः दिव्य मधुर रस की जो स्थिति है, वह वर्तमान मनोविज्ञान की परिधि से परे है। मनोविज्ञान इस प्रकार के भाव साधको को मानसिक रोगी के अतिरिक्त कुछ नही मान सकता । जबकि चित्त जगत में प्रकृति एवं पुख्य का सम्मिलन पूर्णतया तत्वमूलक है। तथा भक्ति शास्त्र में इस प्रकार के ससम्मिलन की काम से उत्पन्न भाव वह उत्कृष्ट भाव है। जिसकी व्याख्या करने की सामर्थ्य मनोविज्ञान में नहीं है। इस प्रकार के सार्थकों के आचरण एवं व्यवहार मनोविकार जन्य अवश्य प्रतीत होते है। किन्तु इस प्राकर की भाव साधंना को मनोविज्ञान मान लेना ही मनोविकार है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मधुर भक्ति के आचरण एवं स्वरूप की व्याख्या स्म्भव नहीं है क्योकि मनोविज्ञान का सम्बन्ध लौकिकता से ही है। जब कि यह आध्यात्मिक साधना का वह श्रेष्ठतम् भाव है। जिसकी व्याख्या करने में वर्तमान मनोविज्ञान सक्षम नहीं है। वर्तमान मनोविज्ञान की अपनी प्रयोग विधि एवं सोभार है मधुर भाव साधना सामान्य मानसिक अवस्था नहीं अपितु अतिमानसिक अवस्था है। जो कि मानसिक अवस्था से उत्कृष्ट है, चूँकि इस प्रकार की भाव साधना पूर्णतया आध्यात्मिक और साधना है इस लिए लौकिक है शास्त्रों के द्वारा गोपीप्रेम जैसे उत्कृष्ट भाव साधना के वर्णित स्वरूप ने व्याख्या सम्भव नहीं हो पाती मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण उस चित जगत के महाभाव की व्याख्या कर सकने में सम्भव नहीं है। गोपी प्रेम जैसे महाभाव की व्याख्या कर सकने में सम्भव नहीं है। गोपी प्रेम जैसे महाभाव की दार्शनिक मिमान्सा तो सम्भव है किन्तु मनोवैज्ञानिक व्याख्या इस लिए सम्भव नहीं हो पाती क्यों कि वर्तमान मनोविज्ञान की अपनी प्रयोग विधि एवं सीमाएँ है। चूँकि भक्ति शास्त्र में मधुर भक्ति का भाव वह उत्कृष्ट शाखा है। जिस भाव का साधक लौकिक जगत में मानसिक रोगों के अतिरिक्त कुछ नहीं कीया सकता

मधुर भाव का परामनोवैज्ञानिक विवेचन भी वर्तमान का प्रतिपाद्य विषय है। मधुर भाव परामनोवैज्ञानिक विवेचन दार्शनिक एवं धार्मिक दोनो ही दृष्टियों से आवश्यक है क्यों कि मधुर भाव जैसे उत्कृष्ट भाव के लक्षण एवं स्वरूप व ज्ञान यदि मनोविज्ञान द्वारा सम्भव नहीं तो यह आवश्यक हो जाता है कि इस प्रकार के भाव की व्याख्या परामनोवैज्ञानिक दृष्टि से की जाय। सह भी विचारणीय विषय है कि क्या परनोवैज्ञानिक इस उत्कृष्ट भाव के लक्षण एवं स्वरूप की यथार्थ व्याख्या कर सकता है, अथवा नहीं। मधुर भाव जैसी उत्कृष्ट भाव साधना चिन्तन की पराकाष्ठा है। इस प्रकार के भाव का गहन दार्शनिक विवेचन करना ही शोध करता का एक मात्र उद्देश्य है। प्रस्तुतीकरण का अभिनव प्रयास किया गया है। इस प्रयास के द्वारा उत्कृष्ट भाव साधना का स्वरूप दार्शनिक दृष्टि से विवेचना का विषय वन जाता है। यद्यपि यह अपने आप में कुछ रहस्य है। जिसकी स्पष्ट अनुमति को सरलतम् दार्शनिक रूप में विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

यह प्रयास एक नवीन दार्शनिक प्रयास है। इसमें सन्देह नहीं।